"यह सुनते ही कूँवर उदैभान के माँ-बाप दोनों दौड़े आए। गले लगाया, मुँह चूमा पाँव पर बेटे के गिर पड़े, हाथ जोड़े और कहा "जो अपने जी की बात है, सो कहते क्यों नहीं, क्या दुखड़ा है जो पड़े पड़े कराहते हो? राजपाट जिसको चाहो दे डालो, कहो तो क्या चाहते हो? तुम्हारा जी क्यों नहीं लगता? भला वह क्या है जो हो नहीं सकता? मुंह से बोलो, जी को खोलो। जो कुछ कहने से सोच करते हो, अभी लिख भेजो। जो भी लिखोगे ज्यों की त्यों करने में आएगी।

[This question paper contains 4 printed pages.]

03.06.24(M)

Your Roll No.....

Maitreyi College LIBRARY Bijwasan, New Delhi-110021

Sr. No. of Question Paper : 1520 **H**

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : हिन्दी की भाषिक विविधताएँ (DSE)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक :75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. हिन्दी सिनेमा की भाषाई विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

वाचिक हिन्दी के क्षेत्रीय रूपों (बिहारी और बंबइया हिन्दी) का वर्णन कीजिए।

2. अमीर खुसरो हिन्दी के प्रथम जनकवि हैं - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

कबीर का हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान है, विवेचना कीजिए।

3. किन कारणों से हम बनारसीदास कृत 'अर्ध कथानक' को हिन्दी की पहली आत्मकथा मानते हैं? (15)

अथवा

गालिब की शायरी तत्कालीन समाज का चेहरा उजागर करती है, स्पष्ट कीजिए।

4. 'पंचलैट' कहानी का सार लिखकर प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'रानी केतकी की कहानी' का मूल प्रतिपाद्य क्या है, विस्तार से लिखें।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (8+7=15)

(अ) ये हम जो हिज् में दीवारो-दर को देखते हैं
कभी सबा को कभी नामा बर को देखते हैं
वो आए घर में हमारे, खुदा की कुदरत है

कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं
नजर लगे न कहीं उसके दस्तओ-बाजू को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्मे-जिगर को देखते हैं
तेरे जवाहिरे-तरफे-कुलह को क्या देखें
हम औजे-तालअ-ए-लालो-गुहर को देखते हैं

अथवा

ऐ मैं जोरी धरे थे दाम। आज आए तुम्हरे काम
साहिब चिंत न कीज कोई। पुरुष जिए तो सब कुछ होइ
यह कहि नारि गई मा पास। गुप्त बात कीनी परगास
माता काहू साँ जिनि कहाँ। निज पुत्री की लज्जा बहौ

(ब) "गोधन ने सबका दिल जीत लिया। मुनारी ने हसरत-भरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आँखें चार हुईं और आँखों-ही-आँखों में बातें हुईं- कहा- 'सुना माफ़ करना! मेरा क्या कसूर!' सरदार ने गोधन को बहुत प्यार से पास बुलाकर कहा, "तुमने जाति की इज्ज़त रखी है। तुम्हारा सात ख़ून माफ़। खूब गाओ सलीमा का गाना।" गुलरी काकी बोली, "आज रात मेरे घर में खाना गोधन!"

अथवा